

# ॥ तैत्तिरीय ब्राह्मणम् ॥

॥ चतुर्थः प्रश्नः ॥

॥ तैत्तिरीयब्राह्मणे तृतीयाष्टके चतुर्थः प्रपाठकः ॥

ब्रह्मणे ब्राह्मणमालभते। क्षत्राय राजन्यम्। मरुद्भ्यो वैश्यम्।  
तपसे शूद्रम्। तमसे तस्करम्। नारकाय वीरहणम्। पाप्मने क्लीबम्।  
आक्रयायायोगूम्। कामाय पुंश्चलूम्। अतिक्रुष्टाय माग्धम्॥१॥

गीताय सूतम्। नृत्ताय शैलूषम्। धर्माय सभाचुरम्। नर्माय  
रेभम्। नरिष्ठायै भीमलम्। हसाय कारिम्। आनन्दाय स्त्रीषखम्।  
प्रमुदे कुमारीपुत्रम्। मेधायै रथकारम्। धैर्याय तक्षाणम्॥२॥

श्रमाय कौलालम्। मायायै कार्मारम्। रूपाय मणिकारम्।  
शुभे वपम्। शरव्याया इषुकारम्। हेत्यै धन्वकारम्। कर्मणे  
ज्याकारम्। दिष्टाय रज्जुसर्गम्। मृत्यवे मृगयुम्। अन्तकाय  
श्वनितम्॥३॥

सन्धये जारम्। गेहायोपपतिम्। निर्ऋत्यै परिवित्तम्।  
आर्त्यै परिविविदानम्। अराध्यै दिधिषूपतिम्। पवित्राय भिषजम्।  
प्रज्ञानाय नक्षत्रदर्शम्। निष्कृत्यै पेशस्कारीम्। बलायोपदाम्।  
वर्णायानूरुधम्॥४॥

नदीभ्यः पौञ्जिष्टम्। ऋक्षीकाभ्यो नैषादम्। पुरुषव्याघ्राय  
 दुर्मदम्। प्रयुञ्ज उन्मत्तम्। गन्धर्वाप्सराभ्यो ब्रात्यम्। सर्पदेव-  
 जनेभ्योऽप्रतिपदम्। अवैभ्यः कितवम्। इर्यताया अकितवम्।  
 पिशाचेभ्यो बिदलकारम्। यातुधानैभ्यः कण्टककारम्॥५॥

उथसादेभ्यः कुजम्। प्रमुदे वामनम्। द्वाभ्यः सामम्।  
 स्वप्रायान्धम्। अधर्माय बधिरम्। संज्ञानाय स्मरकारीम्।  
 प्रकामोद्यायोपसदम्। आशिक्षायै प्रश्जिनम्। उपशिक्षाया  
 अभिप्रश्जिनम्। मर्यादायै प्रश्जविवाकम्॥६॥

ऋत्यै स्तेनहृदयम्। वैरहत्याय पिशुनम्। विवित्यै क्षत्तारम्।  
 औपद्रष्टाय सङ्ग्रहीतारम्। बलायानुचरम्। भूम्ने परिष्कन्दम्। प्रियाय  
 प्रियवादिनम्। अरिष्ट्या अश्वसादम्। मेधाय वासः पल्पूलीम्।  
 प्रकामाय रजयित्रीम्॥७॥

भायै दार्वारम्। प्रभाया आग्नेन्धम्। नाकस्य पृष्ठायाभि-  
 पेत्तारम्। ब्रध्नस्य विष्टपाय पात्रनिर्णेगम्। देवलोकाय पेशितारम्।  
 मनुष्यलोकाय प्रकरितारम्। सर्वेभ्यो लोकेभ्य उपसेत्तारम्।  
 अवर्त्यै वधायोपमन्थितारम्। सुवर्गाय लोकाय भागदुघम्।  
 वर्षिष्ठाय नाकाय परिवेष्टारम्॥८॥

अर्मेभ्यो हस्तिपम्। जवायांश्वपम्। पुष्ट्यै गोपालम्।  
 तेजसेऽजपालम्। वीर्यायाविपालम्। इरायै कीनाशम्।

की॒ला॒य सु॒राका॒रम्। भ॒द्राय॑ गृ॒हप॑म्। श्रेय॑से वि॒त्तध॑म्।  
अध्य॑क्षायानु॒क्षत्ता॒रम्॥१॥

म॒न्यवे॑ऽयस्ता॒पम्। क्रो॒धाय॑ नि॒स॒रम्। शोका॑याभि॒स॒रम्।  
उ॒त्कूल॑वि॒कूला॒भ्यां त्रि॒स्थि॒नम्। यो॒गाय॑ यो॒क्ता॒रम्। क्षे॒माय॑  
वि॒मो॒क्ता॒रम्। वपु॑षे मानस्कृ॒तम्। शी॒ला॒याञ्जनी॑का॒रम्। नि॒र्ऋ॒त्यै  
को॒शका॒रीम्। य॒माया॑सू॒म्॥१०॥

य॒म्यै य॒मसू॑म्। अथ॑र्व॒भ्योऽव॑तो॒काम्। सं॒व॒त्स॒राय॑  
पर्या॑रिणी॒म्। प॒रि॒व॒त्स॒राया॑वि॒जा॒ताम्। इ॒दा॒व॒त्स॒राया॑प॒स्क॒द्व॒रीम्।  
इ॒द्व॒त्स॒राया॑ती॒त्वं॒रीम्। व॒त्स॒राय॑ वि॒ज॑र्ज॒राम्। सं॒व॒त्स॒राय॑  
प॒लि॒क्री॑म्। वना॑य वन॒पम्। अ॒न्यतो॑र॒ण्याय॑ दा॒व॒पम्॥११॥

सरो॑भ्यो धै॒व॒रम्। वेश॑न्ता॒भ्यो दा॑श॒म्। उ॒प॒स्था॑व॒री॒भ्यो बै॒न्द॒म्।  
न॒ङ्गुला॑भ्यः शौष्क॒लम्। पा॒र्या॑य कै॒व॒र्तम्। अ॒वा॒र्या॑य मा॒र्गा॒रम्।  
ती॒र्थेभ्य॑ आ॒न्द॒म्। विष॑मे॒भ्यो मै॒ना॒लम्। स्व॒नेभ्यः॑ प॒र्ण॑कम्। गुहा॑भ्यः  
कि॒रा॑तम्। सा॒नु॒भ्यो ज॒म्भ॑कम्। प॒र्व॒तेभ्यः॑ कि॒म्पू॑रुषम्॥१२॥

प्र॒ति॒श्रु॒त्का॑या ऋ॒तु॒लम्। घो॒षाय॑ भु॒षम्। अ॒न्ता॑य  
ब॒हुवा॑दि॒नम्। अ॒न॒न्ता॑य मू॒कम्। म॒ह॑से वी॒णावा॑दम्। क्रो॒शा॑य  
तू॒णव॑ध्मम्। आ॒क्र॒न्दा॑य दु॒न्दु॒भ्याघा॑तम्। अ॒व॒र॒स्प॒राय॑ शङ्ख॑ध्मम्।  
ऋ॒भु॒भ्यो॑जि॒नस॑न्ध्या॒यम्। सा॒ध्येभ्य॑श्चर्म॒ग्णम्॥१३॥

बी॒भ॒त्सा॑यै पौ॒ल्क॒सम्। भू॒त्यै जा॑गर॒णम्। अ॒भू॒त्यै स्व॑प॒नम्।

तुलायै वाणिजम्। वर्णाय हिरण्यकारम्। विश्वेभ्यो देवेभ्यः  
सिध्मलम्। पश्चाद्दोषाय ग्लवम्। ऋत्यै जनवादिनम्। व्यृद्ध्या  
अपगल्भम्। स॒२श॒राय॑ प्रच्छिदम्॥१४॥

हसाय पु॒३श्च॒लूमा ल॑भते। वी॒णावा॒दं ग॑णकं गी॒ताय॑। याद॑से  
शाबु॒ल्याम्। न॒र्माय॑ भद्रव॒तीम्। तू॒णव॒ध्मं ग्रा॑म॒ण्यं पा॑णिसङ्घा॒तं  
नृ॒त्ताय॑। मोदा॑यानु॒क्रोश॑कम्। आ॒न॒न्दाय॑ तल॒वम्॥१५॥

अ॒क्ष॒रा॒जाय॑ कि॒तव॑म्। कृ॒ताय॑ सभा॒विन॑म्। त्रेता॑या आदि॒  
नव॑द॒रुश॑म्। द्वा॒प॒राय॑ बहिः॒ सद॑म्। क॒ल॒ये स॑भास्था॒णुम्।  
दुष्कृ॑ताय॑ च॒रका॑चार्यम्। अध्व॑ने ब्रह्मचा॒रिण॑म्। पि॒शा॒चेभ्यः॑  
सै॒लग॑म्। पि॒पा॒सायै॑ गोव्य॒च्छम्। निर्ऋ॑त्यै गोघा॒तम्। क्षु॒धे  
गो॑वि॒कर्त॑म्। क्षु॒त्तृष्णा॑भ्या॒न्तम्। यो गां वि॒कृन्त॑न्तं मा॒२सं  
भिक्ष॑माण उप॒तिष्ठ॑ते॥१६॥

भूम्यै पी॒ठस॑र्पिण॒मा ल॑भते। अ॒ग्नये॑ऽ२स॒लम्। वा॒यवे॑  
चाण्डा॒लम्। अ॒न्तरि॑क्षाय व॒२शन॑र्तिनम्। दि॒वे ख॑ल॒तिम्। सू॒र्याय॑  
हर्य॑क्षम्। च॒न्द्रम॑से मि॒र्मिर॑म्। नक्ष॑त्रेभ्यः कि॒लास॑म्। अ॒ह्ने शु॒क्लं  
पि॒ङ्गल॑म्। रा॒त्रियै॑ कृ॒ष्णं पि॒ङ्गाक्ष॑म्॥१७॥

वा॒चे पु॒रुष॑मा ल॑भते। प्रा॒णम॑पा॒नं व्या॑नमु॒दान॑ २ स॒मानं॑ तान्  
वा॒यवे॑। सू॒र्याय॑ चक्षु॒रा ल॑भते। मन॑श्च॒न्द्रम॑से। दि॒ग्भ्यः श्रो॒त्रम्।  
प्र॒जाप॑तये॒ पुरु॑षम्॥१८॥

अथैतानरूपेभ्य आलभते। अतिह्रस्वमतिदीर्घम्। अति-  
 कृशमत्यसलम्। अतिशुक्लमतिकृष्णम्। अतिश्लक्ष्णमतिलोमशम्।  
 अतिकिरिटमतिदन्तुरम्। अतिमिर्मिरमतिमेमिषम्। आशायै  
 जामिम्। प्रतीक्षायै कुमारीम्॥१९॥

ब्रह्मणे गीताय श्रमाय सन्धये नदीभ्य उध्सादेभ्य ऋत्ये भाया अमैभ्यो मन्यवे यम्यै दशदश  
 सरौभ्यो द्वादश प्रतिश्रुत्कायै बीभत्सायै दशदश हसाय सप्ताक्षराजाय त्रयोदश भूम्यै दश वाचे षडथ  
 नवैकान्नविंशतिः॥१९॥

ब्रह्मणे यम्यै नवदश॥१९॥

ब्रह्मणे कुमारीम्॥

हरिः ओम्॥

॥इति श्रीकृष्णयजुर्वेदीयतैत्तिरीयब्राह्मणे तृतीयाष्टके चतुर्थः  
 प्रपाठकः समाप्तः॥